सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - ऊर्जा (द्वितीय)

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

"बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

हे जीवन!

हे धर्म!

हे भक्ति!

हे ज्ञान!

हे सिद्धि

हे सिद्धांत!

हे मान्यता!

हे श्रद्धा!

हे विश्वास!

हे मन!

हे तन!

हे धन!

हे गुरु!

हे माता पिता!

हे पत्नी!

हे कुटुंब!

हे मित्र!

हे सखी!

हे प्रीत!

हे आत्मा!

हे परमात्मा!

कहीं भी निहालो

कहीं भी संवारो

कहीं भी अध्ययनों

कहीं भी तपस्यो

कहीं भी ध्यानों

कहीं भी भक्तों

कहीं भी जुडो

कहीं भी स्पर्शों

कहीं भी पहुँचो

कहीं भी उपाधों

हाँ! " बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

कान्हा! तेरा चरित्र को समझा

कान्हा! तेरे पुरुषार्थ को पूजा

कान्हा! तेरे ज्ञान को सांधा

कान्हा! तेरी लीला में डूबा

कान्हा! तेरी रीत को अपनाया

कान्हा! तेरी प्रीत को संवारा

ओहह!

" बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

जन्म जन्म धरे

जीवन जीवन चरे

साँस साँस भरी

घट घट चले

घडी घडी दौडे

ओ कान्हा!

" बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

"Vibrant Pushti "

एक व्यक्ति

दो व्यक्तियों

तीन व्यक्तियों

चार व्यक्तियों

पाँच व्यक्तियों

छह व्यक्तियों

शायद यही ही हम और हमारा कुटुंब

हाँ! अकेले रहे तो अकेले

पर

जुडते गये तो एक कुटुंब

सोचते है अब

जुडते जाते है तो

क्या लीला

क्या स्थिति

क्या गति

होती है?

एक बोले तो अनेक बोले

एक बोले तो अनेक अर्थ होय

एक सुने तो अनेक अनुसंधान होय

एक सुनाये तो अनेक सुनाते होय

एक कुछ करे तो अनेक करने को स्वतंत्र होय

एक न करे तो अनेक छूप छूप करते होय

एक न करे तो कोई न करते होय

एक पूछे तो अनेक सूचन होय

एक सिद्धांत समझ तो अनेक सैद्धांतिक समझ होय

एक को कोई हक होय तो अनेक हकदार होय

एक रुके तो अनेक रुकने का हक होय

एक वचन तो अनेक निभाते होय

एक रिवाज हो तो अनेक प्रथा होय

एक धर्म धरा तो अनेक धर्म धराय

एक मान्यता पाई तो अनेक मान्यता अपनायी

एक रीति जगाई तो अनेक रीति उभराई

एक भोजन पकाई तो अनेक स्वाद पकवाई

नीति नीति से अनेक मार्ग दर्शाई

रीति रीति से अनेक कर्म कराई

मति मति से अनेक समझ समझाई

तो एक से जुडाई

तो अनेक जुडाई

तो एक के साथ

तो अनेक साथ

तो एक कुटुंब

तो अनेक कुटुंब

तो एक संस्कार

तो अनेक संस्कारे

तो एक कर्म

तो अनेक कर्म

तो एक धर्म

तो अनेक धर्म

तो एक जीवन

तो अनेक जीवन

तो एक अर्थ

तो अनेक अर्थ

हाँ! यह कैसा व्यक्तित्व?

" Vibrant Pushti "

नही नही ऐसा नही ही हो सकता है?

जो हमारे शास्त्रों - पुराणों और संस्कृति में लिखा है

1. महाज्ञानी रावण श्री सीताजी का हरण कर सकता है

या

2. श्री सीताजी की सतीव्रता में कोई असामर्थ्य सामान्यता है?

या

3. मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम श्री धर्म सहध्यायी सीताजी का त्याग करे?

भ्रमित की न कोई रीत है।

चलित की न कोई गति है।

न कोई ऐसी मान्यता है।

न कोई ऐसी धारणा है।

न कोई सैद्धांतिक अनेक अर्थ है।

न कोई धर्म की रक्षा के लिए कोई संस्थापना है।

अति गहराई से अध्ययन करके आध्यात्मिक ऋषि मुनियों की कोई परंपरा भी ऐसी नही हो सकती है जिससे हमारी धर्म यज्ञता और संस्कार शिष्टता में कोई निम्नता है।

न कोई संयमता और न कोई ऐसी तांत्रिक - मांत्रिक - यांत्रिक साक्षरता है, जो हमारे आचार्यों, भक्तों, तत्वचिंतको ऐसी बहुरुपी ऋढिचुस्तता को अपनाये?

नही नही हमारी संस्कृति में ऐसी कोई योग्य मान्यता हो ही नही सकती। यह कोई अशिक्षित गैरमार्गिय षडयंत्र है।

क्या हम इतना योग्य समझ तो है ही कि हमें सत्यता से अध्ययनता की सैद्धांतिक विश्वास नियंता हो।

" Vibrant Pushti "

अरे! ओहह! आपको अच्छा घर, अच्छा भोजन, अच्छे कपडे, अच्छा सुख और अच्छा काम। ओहह! यह तो बहुत ही सरल है। यह तो आप खुद ही आराम से करके खुदके ही कर्म से पा सकते हो।
अच्छा!

हाँ!

प्रथम तो हमें तय करना पडेगा

मुझे कौनसा प्रकार का घर होना चाहिए

मुझे कौनसे प्रकार के भोजन चाहिए

मुझे कौनसे प्रकार के सुख चाहिए

मुझे कौनसे प्रकार के काम चाहिए

हाँ! जो व्यक्ति यह ही तय न कर सकता हो तो वह सदा यह घर, भोजन, कपडे, सुख और काम नही पा सकता।

सोच लो!

सूची बना डालो

वैसे तो यह कहीं बार बनाया।

नहीं नहीं! एक भी बार नही बनाया

सच कहता हूँ।

क्यूँकि, हमने हर बार अनेक व्यक्तियों के घर, भोजन, कपडे, सुख और काम देखे है, वह भी अलग अलग तौर से, हाँ! अगर जो व्यक्ति ने सूची बना कर ही उनका ही घर, भोजन, कपडे, सुख और काम देखते तो शायद हम भी त्वरित जाग जाते - हाँ! मैं भी सूची बनाकर यही सूची के आधार पर मैं भी यही राह पर रहु, तो अवश्य हमारा भी घर, भोजन, कपडे, सुख और काम मेरा खुद का हो ही सकता है और मैं आनंद और शांति पा ही सकता हूँ।

" Vibrant Pushti "

रेडियो से समाचार सुने
टीवी से समाचार सुने
चौराहे नुक्कड से समाचार सुने
बाजार दफतर से समाचार सुने
घर पधारे विशेषज्ञ से समाचार सुने
सुन सुन कर इतना सुना
समाचारों से सारे देशवासियों सुने
हर सुनवाई पर देश की संस्कृति सुनी
हर संस्कृति से यही सुना "तुम सुधर जाओ"
हर समाचार में दुष्कर्मता
हर समाचार में व्यभिचार
हर समाचार में पापाचार
हर समाचार में दुष्टाचार
हर समाचार मेें मिथ्याचार
हर समाचार में भ्रष्टाचार
हर समाचार में दूरव्यवहार
हर समाचार में दुराचार
हर समाचार में विषयाचार
हर समाचार में निराधार
हर समाचार में अत्याचार
एकेला बैठा

" Vibrant Pushti "

गरीबी कहां नही है?

हर देश में गरीबी है

हर समाज में गरीबी है

हर ज़ाती में गरीबी है

हर जाति में गरीबी है

हर नासमझ में गरीबी है

हर अनजान में गरीबी है

हर अज्ञान में गरीबी है

हर अधर्म में गरीबी है

हर अंधश्रद्धा में गरीबी है

हर अभिमान में गरीबी है

हर धृष्टता में गरीबी है

हर कृतघ्ना में गरीबी है

हर घृणा में गरीबी है

हर फरेब में गरीबी है

हर नफरत में गरीबी है

हर रोग में गरीबी है

हर अयोग्यता में गरीबी है

हर छल में गरीबी है

हर दरिद्रता में गरीबी है

हर बुराई में गरीबी है

हर नीचता में गरीबी है

हर संताप में गरीबी है

हर दु:ख में गरीबी है

हमें ही सोचना है

गरीबी कैसे मिटेगी?

कोई कितनी भी योजना बनाये!

कोई कितनी भी कोशिश करें!

गरीबी तो हमसे ही हटेगी और मिटेगी।

क्यूँकि वह तो हमने हमारी प्राथमिक वर्ण और वर्ग व्यवस्था से ही उदभवी है।

" Vibrant Pushti "

कितने डूबे है हम

कितने खोये है हम

कितने जुडे है हम

सारी साँसों से

सारी द्रष्टि से

सारी प्रकृति से

सारी सृष्टि से

सारी मति से

सारे मन से

सारे तन से

सारे धन से

सारे रोम से

सारे ज्ञान से

सारे भाव से

सारे कर्म से

सारे रंग से

सारे पुरुषार्थ से

सारे बाह्य तरंग से

सारे अंत:करण से

सारे तत्व से

सारे स्पर्श से

सारे अक्षर से

सारे आत्म से

सारे भव से

सारी घडी से

सारी जडी से

सारी जिज्ञासा से

सारी निधि से

सारी नीति से

सारी गति से

सारी दिशा से

सारी रज से

"श्री कृष्ण" से कि

हर कृति तो उनके लिए

हर वृत्ति तो उनके लिए

हर संस्कृति तो उनके लिए

हर पुष्टि तो उनके लिए

हाँ! " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! पूर्व बंगाल में

हाँ! पश्चिम गुजरात में

हाँ! उत्तर कश्मीर में

हाँ! दक्षिण तमिलनाडू में

हर स्थली स्थली पर

हर मानव मानव पर

हर उत्सव उत्सव पर

हर धर्म धर्म पर

हर आनंद आनंद पर

केवल " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! इतनी गहराई से डूबे है

हाँ! इतनी अधिराई से खोये है

हाँ! इतनी प्रीत से जुडे है

हे कृष्णा! हे कृष्णा! हे कृष्णा!

" Vibrant Pushti "

एक ऐसी बात कहता हूँ

शायद जीवन पलट जाय

हम हर बार संस्कार की बातें करते रहते है

हम हर बार धर्म की बातें करते रहते है

हम हर बार ऐसे सोचते रहते है की ऐसा क्यूँ? ऐसा नही, यह नही, वो नही। हम हमारी कुछ करने की जिज्ञासा खो देते है

हमारी द्रष्टि में जो कोई कुछ करे तो इनकी गलतियों पर या उनकी नासमझ पर ही ध्यान केंद्रित होता है। यह कैसे लक्षण हमारे

हम इतने सिमित है की हम यही कर सकते है आगे कुछ अध्ययन या कुछ सकारात्मक करने की हिम्मत नही जोड पाते है। क्यूँ?

क्यूँकि हम ज्यादा नकारात्मक है, अधिरे है, अधूरे है, आलसी है।

हम ऐसे है जो जानते है कि यह मुझे परेशान करेगा, हैरान हूंगा तो भी हम वही करते है जो हमें नुकसान पहुंचाये। इसलिए तो हम ज्यादा रोगी रहते है।

हम ऐसी ऐसी मान्यता से बंधे है जो दूसरे बांधते है और खुद करते है। कितनी नाइंसाफी है हमारे जीवनकी, जो न किसीसे संबंध बांधते है न किसीसे रिश्ता जोडते है।

अकेले! अकेले और अकेले।

हम सदा पुराने शास्त्रों से ही लगाव रखते रहते है, हर बार उन्हीं की बातें, कथायें, चर्चाएं, दर्शाते, उपयोग करते है पर कभी उनमें से वैज्ञानिक सिद्धांत नही जानते है बस एक गाय के बछेरे की तरह उनके आसपास घुमते रहते है। कैसी अंधश्रद्धा!

आज हम यही समझ की उम्र पर तो है ही कि हम योग्यता को समझ सके, कर सके और पा सके।

जिन्हें जो समझना हो

जिन्हें जो करना हो

जिन्हें जो चलना हो

वो वही ही जाने

हम तो खुद अपनी आंखें खोल ही सकते है। ऐसा करने का हमें पुरा हक है और स्वतंत्र भी है।

हाँ! तब ही हम अपने आप से खुश रहेंगे, कुछ करेंगे, साथ साथ आनंद पायेंगे।

" Vibrant Pushti "

विश्वास है ऐसा अपनी अंदर

जब श्री प्रभु का दर्शन करते है तब नैनन में चमक की ज्योति प्रकटती है

क्यूँ ज्योति प्रकटती है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु को दर्शन करते हमारे नैनन से उनके तिरछे नैन मिलाते है तो अधर काँपते है

क्यूँ अधर काँपते है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु को आंतर तन मन और हृदयस्थ से दर्शन करते है तो साँसों में उर्जा उठती है

क्यूँ उर्जा उठती है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु को दंडवत प्रणाम से दर्शन करते है तो रोम रोम में स्पंदन जागते है

क्यूँ स्पंदन जागते है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु की स्मरण परिक्रमा दर्शन करते है तो अपने पैर की ऊंगलियों में ठंडक सी छाती है

क्यूँ ठंडक सी छाती है?

आप ही अपने आप को कहना

जब श्री प्रभु का दर्शन का प्रसाद ग्रहण करते है तो अपने आंतर तन मन और धन में पवित्रता का संचार होता है

क्यूँ पवित्रता का संचार होता है?

आप ही अपने आप को ही कहना

हाँ! अगर नही ही होता हो तो कोशिश अवश्य करना

भक्त स्मरण का विश्वास है कोई तो अनुभूति अवश्य होगी।

" Vibrant Pushti "

आज श्री माताजी के दर्शन करने पहुंचा, मन में एक बात उठी
हमारी संस्कृति में

जो भी माताजी है हर माताजी नारी स्वरुप में है। हम बार बार उनकी पूजा अर्चना करते है।

शायद ऐसा भी है कि

1. चोर - डाकुओं भी श्री माताजी को ही मानते है

2. कूट्टणखाना चलाने वाले भी श्री माताजी को ही मानते है

3. दारु - जुगार के अड्डे वाले भी श्री माताजी को मानते है

4. भ्रष्टाचारी भी श्री माताजी को मानते है

5. कहीं न कहीं प्रकार से एक दूसरे को ठगने वाले भी श्री माताजी को मानते है

6. धर्म और मजहब वाले भी श्री माताजी को मानते है

7. भीख मांगने वाले भी माताजी को मानते है

8. जो कुछ नही करता है वह भी श्री माताजी को मानते है

9. गरीब - तवंगर भी श्री माताजी को मानते है

10. नेता भी श्री माताजी को मानते है

11. सुखी संपन्न भी श्री माताजी को मानते है

सोचने लगा - ओहहह! सब लोग श्री माताजी को मानते है - अर्थात नारी को - जो हमारी संस्कृति की एक धरोहर है।

ऐसी कैसी विचारधारा और आचरता की हम नारी का ही सन्मान न करें और निम्नता और नीचता के लिए उपयोग और उपभोग करें!

क्या हमारी भी "माँ" "बहन" "पत्नी" "पुत्री" है जो किसी ओर की भी है, तो ऐसी अधमता कैसी?

हमारे देश में इतनी कटुता - अधर्मता - अघटितता - अपराधता कैसी!

क्या हम इतने निर्बल है?

क्या हम इतने दुराचारी है?

क्या हम इतने अभद्र है?

क्या हम इतने निष्ठुर है?

क्या हम इतने कामी और क्रोधी है?

हम श्री राम को पूजते है

हम इश्वर अल्लाह को एक मानते है

इनके समाज और देश की ऐसी दुर्दशा!

और हम बार बार पूजते है श्री माताजी को - नारीत्व को!

प्रतिज्ञा करो - विजयादशमी के ऐसे शुभ दिन से - जो हमारी संस्कृति है -

"नारी सन्मानता"

"सदा रहेंगे रक्षक नारीत्व का"

" Vibrant Pushti "

"आप का मुखडा देखा

बहुत ही सुंदर है

इन्हें कभी किसी पर

नजर नही रखवाना

नही तो संसार

असार हो जायेगा"

यह हर एक व्यक्ति को छूता है

शायद यही ही असर से जगत कितना रोगी और भोगी है।

हर एक मनुष्य कैसे कैसे तर्क वितर्क करते है - कहीं सिद्धांतों को डूबो दिया - खो दिया - तोड दिया। यही ही तर्क और वितर्क में एक ही संस्कृति है जो हमें स्वस्थ, सुखी और आनंदमय कर सकती है और वह संस्कृति है - "आध्यात्म" जो हमें सदा सुरक्षित और जागृत रखती है।

न मोह - न माया - न काया

रख दे तन मन धन से तमाम

न क्रोध - न काम - न अभिमान

रख दे ज्ञान भाव धर्म से तमाम

न घृणा - न तृष्णा - न अपूर्णता

रख दे कर्म पुरुषार्थ भक्ति से तमाम

यही ही अंश है

यही ही ब्रह्म है

यही ही सत्य है

" Vibrant Pushti "

हमारे देश उपर कहीं सत्ता ने राज किया। कितने इतिहास के पन्ने पलट गये। जब भी कोई भी बाहर का धर्म आक्रमण हुआ पर न हम डगे और हमारी संस्कृति डगी।
आज भी हम श्री राम को पूजते है और श्री कृष्ण के चरित्र सिद्धांतों से जीते है।

वही वेद - उपनिषदों - गीता - भागवत - रामायण।

क्यूँ?

क्यूँकि यह सर्वे से ही हमारी सृष्टि है - प्रकृति है - पुष्टि है।

क्यूँकि यही ही हमारी धरती है - आकाश है - अग्नि है - वायु है और जल है।

क्यूँकि यही से ही हमारे आचार्यों - शंकराचार्य - रामानुजाचार्य - माधवाचार्य - निम्काचार्य - वल्लभाचार्य ने सनातन धर्म ज्योत प्रक्टायी जो जन्म जीवन - आत्म परमात्मा का सच्चिदानंद स्वरूप का अनुभव करवाया।

तो हम! आज यही धूरा को क्यूँ समझ नही पाते, संभल नही पाते, रक्षण नही कर पाते, खुद को सार्थक नही कर पाते।

सोचो! जो जो भी व्यक्ति की उम्र 45 (पैंतालिस) से उपर है वह क्या चिंतन करके कुछ समझ नही सकते? कुछ उजागर नही कर सकते? कुछ परिवर्तन नही कर सकते?

क्या हम इतने निर्बल है?

क्या हम इतने लाचार है?

क्या हम इतने आधारित है?

क्या हम इतने मजबूर है?

क्या हम इतने द्रष्टि हीन है?

क्या हम इतने डरपोक है?

क्या हम इतने मायावादी है?

क्या हम इतने तर्कसंगत है?

क्या हम इतने आडंबर है?

हम क्या कहेंगे!

हमारा मन, तन, धन और आत्मा ही कहता है - हाँ!

जागना तो है ही।

तब भी तो मानव से मनुष्य

मनुष्य से आत्मधारी

आत्मधारी से धर्मधारी

धर्मधारी से पुरुषार्थधारी

पुरुषार्थधारी से सत्यधारी

सत्यधारी से सगुणधारी

सगुणधारी से भक्तिधारी

भक्तिधारी से देवधारी

देवधारी से परमात्माधारी

परमात्माधारी से परब्रह्मधारी

" Vibrant Pushti "

हमारा मन एक हो सकता है

पर हम जिसके साथ और पास रहते है उनका और हमारा मन शायद एक हो सकता है।

अगर यह बात अति सूक्ष्मता से और गहराई से सोचे तो हम भी किसीका साथी और किसीके पास रहते है तो हमारा मन भी एक किसीके लिए नही हो सकता है।

अर्थात मन अलग

तो विचार अलग

तो अर्थ अलग

तो समझ अलग

तो क्रिया अलग

तो रीत अलग

तो नियम अलग

तो रंग अलग

तो भाव अलग

तो स्वभाव अलग

तो राग अलग

तो धारणा अलग

तो सूर अलग

तो मार्ग अलग

तो सूचन अलग

तो शिक्षा अलग

तो ध्यान अलग

तो डग अलग

तो ध्येय अलग

तो व्यवहार अलग

तो व्यवसाय अलग

तो व्यवस्था अलग

तो क्षमता अलग

तो ज्ञान अलग

तो विज्ञान अलग

तो रमत अलग

तो भूख अलग

तो अर्चन अलग

तो भूमि अलग

तो द्रष्टि अलग

तो सृष्टि अलग

तो प्रकृति अलग

तो वृत्ति अलग

तो कृत्य अलग

तो वृद्धि अलग

तो स्पर्श अलग

तो समृद्धि अलग

तो संस्कृति अलग

तो जन्म अलग

तो जीवन अलग

बहुत कुछ अलग..........

ओहह! तो तो अलग अलग और अलग

यही अलगता ही विभिन्नता है

यही अलगता ही विघटनता है

यही अलगता ही विखुटता है

यही अलगता ही विषमता है

यही अलगता ही विशालता है

यही अलगता ही विकासता है

यही अलगता ही विपरीतता है

यही अलगता ही परिपक्वता है

यही अलगता ही साधारणता है

यही अलगता ही सामान्यता है

यही अलगता ही सार्थकता है

यही अलगता ही कार्यशक्ति है

यही अलगता ही कार्यदक्षता है

यही अलगता ही मुख्यता है

यही अलगता ही उच्चता है

यही अलगता ही शासनता है

यही अलग अलगता में ही हमें जीना है - संवरना है - संभलना है - जाना है और पाना है।

जिसने ज्यादा मन जोड लिया

जिसने ज्यादा मन एक कर लिया

वह गुरु है

वह आचार्य है

वह वैज्ञानिक है

वह भगवान है

जो न मन जोड पाया

जो न मन एक कर पाया

वह .... सोचलो?

" Vibrant Pushti "

"तुलना" "Comparison"

द्रष्टि से

मन से

विचार से

क्रिया से

रीत से

वचन से

शब्दों से

स्वर से

प्राप्तता से

सिद्धांत से

सिद्धि से

आर्थिकता से

भौतिकता से

आध्यात्म से

कर्म से

धर्म से

सुख से

दुःख से

ज्ञान से

भक्ति से

शास्त्र से

शासन से

अनुभव से

गुणवत्ता से

और कहीं रंग तरंग से

और कहीं स्पर्श से

और कहीं बंधन से

और कहीं संबंध से

क्या हमें जन्म से ऐसा है?

क्या हमें कुटुंब से ऐसा है?

क्या हमें शिक्षा से ऐसा है?

क्या हमें जीवन पद्धति से ऐसा है?

क्या हमें ऐसा ही करते करते जीवन की पूर्णता पाना है?

उठते जागते

सोते संवरते

बस - तुलना तुलना और तुलना

बस - Comparison Comparison and Comparison

क्या हमें हम पर विश्वास नही है?

क्या हमारे सिद्धांतों पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारे संस्कारों पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी शिक्षा पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारा मन तन और धन पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी जिज्ञासा पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी शक्ति पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी काबिलियत पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारा कर्म पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारा धर्म पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी जीवन पद्धति पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारे संबंध पर विश्वास नही है?

क्या हमें हमारी नीति पर विश्वास नही है?

अगर नही ही है तो तुलनात्मक जीवन से तो हम ऐसा ही होंगे और रहेंगे

जैसे किसीके सहारे

जैसे किसीके भरोसे

जैसे किसीके आधारित

जैसे किसीके लाचार

जैसे किसीके भार

जैसे किसीके मार

जैसे किसीके नादार

जैसे किसीके डर

जैसे किसीके चर

जैसे किसीके नजर

ओहह! तुलना तुलना तुलना

सोचों! हम यही है!

" Vibrant Pushti "

हम हिन्दुस्थानी ने

श्रीराम का सिद्धांत पाया है

श्रीकृष्ण का पुरुषार्थ पाया है

श्रीशंकर का धर्म पाया है

श्रीबुद्ध का ज्ञान पाया है

श्रीमहावीर का ध्यान पाया है

श्रीकाली का शोर्य पाया है

श्रीगुरुनानक का त्याग पाया है

श्रीअल्लाह का याचना पाया है

श्रीजरथुष्ट का जुडना पाया है

श्रीईसाई का शांतता पाया है

ऐसे हिन्दुस्थानी जो मिलझुल के बसे - एकता से रहे - साथ साथ कार्य करे - हर रिश्ते से उत्सव मनाये।

उन्हें कैसे कैसे और कहां कहां से आते है कोई आतंकवादी - कोई नेता के रूप में

कोई मजहब के आधार में

कोई परदेश के अधर्मता में

कोई अमानवीय नरभक्षी में

कोई आधुनिक सत्ता लोभी में

तो ऐक यज्ञता से और पुरुषार्थ से एकजुट होकर कहते है

न कोई हमें मिटा सकता है

न कोई हमें तोड सकते है

न कोई हमें हरा सकते है

न कोई हमें डरा सकते है

क्यूँकि

हम ही राम है

हम ही कृष्ण है

हम ही शंकर है

हम ही बुद्ध है

हम ही महावीर है

हम ही काली है

हम ही गुरुनानक है

हम ही अल्लाह है

हम ही जरथुष्ट है

हम ही ईसाई है

" Vibrant Pushti "

जा रहे थे कहीं दूर अकेले

मुझसा न साथ कोई चलते

तन कहे मैं अकेला

पर

मन कहे कैसे मैं अकेला?

इनकी यादें उनके वादे कहीं इरादे

कहां कहां से जुडेला

कैसे मैं अकेला

नैन कहे कैसे मैं अकेला

इनके सपने उनकी तसवीरें कहीं अफसाने

कहां कहां से लिपटेला

कैसे मैं अकेला

आत्म कहे मैं अकेला

धडकन कहे मैं अकेला

साँस कहे मैं अकेला

चलते चलते सभी को साथ लेते

मन दौडे तो सब दौडे

नैन दौडे तो सब दौडे

दौड दौड में मन थके

दौड दौड में नैन थके

दौड दौड के तन थके

पर

न थके आत्म मेरा

न थके धडकन मेरी

न थके साँसें मेरी

पता चला खुद को खुद से

सच्चे साथी है आत्म धडकन साँसे

खुद को जगाया खुद को जताया

साँस संवारी तो तन मन नैन संवारा

धडकन गूँजाई तो तन मन नैन मधुरा

आत्म सिंचाई तो तन मन नैन प्रज्वल्लाई

ओहह! सच्चे साथी सच्चे पुरुषार्थी

जो समझ गया वो संसार जीताई - जीवन सिद्धाई

जीव जगत का यही है सत्य

आत्म ब्रह्मांड का यही है साध्य

" Vibrant Pushti "

मैं खेलता रहा आत्मा की आवाजें से
मैं खेलता रहा जीवन की गुमराहों से
मैं खेलता रहा तर्क की धृष्टता से
मैं खेलता रहा वचनों की जूठी भरमारों से
मैं खेलता रहा क्षमा की आलोचनाओं से
मैं खेलता रहा तन के रोगों से
मैं खेलता रहा सिद्धांतों की द्विअर्थी से
मैं खेलता रहा नजरों की दुष्टता से
मैं खेलता रहा मन के विकारों से
मैं खेलता रहा विश्वास की जुठ्ठाईओ से
मैं खेलता रहा धन के व्यवहारों से
मैं खेलता रहा संबंध की लागणीओ से
मैं खेलता रहा धर्म के आडंबरो से
मैं खेलता रहा सच्चाई की दुहाई से
मैं खेलता रहा वडीलों के आशीर्वादो से
मैं खेलता रहा कौटुंबिक आकांक्षाओं से
मैं खेलता रहा भाई की तरक्की से
मैं खेलता रहा बहन की रक्षा से
मैं खेलता रहा दोस्त की वफादारी से
मैं खेलता रहा समाज के रिश्तों से
मैं खेलता रहा मातपिता की कृपा से
सच में क्या मैं आज ऐसा जी रहा हूँ?
" Vibrant Pushti "

कितनी महान है भूमि
कितनी विशुद्ध है भूमि

कितनी पवित्र है भूमि

कितनी श्रद्धेय है भूमि

कितनी पौरुषेय है भूमि

कितनी सिद्धांतीय है भूमि

कितनी तपस्वी है भूमि

कितनी ज्ञानीय है भूमि

कितनी भक्तिय है भूमि

कितनी कर्मिय है भूमि

कितनी जागतीय है भूमि

कितनी सृजनीय है भूमि

कितनी सर्जनीय है भूमि

कितनी सार्थकीय है भूमि

कितनी आदरणीय है भूमि

कितनी सन्मानीय है भूमि

कितनी विश्वसनीय है भूमि

कितनी सरल है भूमि

कितनी सात्विक है भूमि

कितनी आस्तिक है भूमि

कितनी प्राकृतिक है भूमि

कितनी दयामय है भूमि

कितनी नैतिक है भूमि

कितनी धार्मिक है भूमि

कितनी सिद्धेय है भूमि

कितनी न्यायिक है भूमि

कितनी भाविक है भूमि

कितनी दार्शनिक है भूमि

कितनी वैज्ञानिक है भूमि

कितनी अलौकिक है भूमि

कितनी आत्मीय है भूमि

कितनी प्रीतमय है भूमि

कितनी रंगीनिय है भूमि

कितनी संगीतय है भूमि

कितनी अभिन्न है भूमि

कितनी संस्कृत है भूमि

कितनी क्षमाशील है भूमि

कितनी सुशील है भूमि

कितनी वचनीय है भूमि

कितनी निर्भय है भूमि

कितनी एकात्मीय है भूमि

कितनी पुरुषार्थी है भूमि

कितनी अद्भुत है भूमि

कितनी अद्वैत है भूमि

हम कितने भाग्यशाली है की हमने ऐसी भूमि पर जन्म धारण किया है जो जन्मभूमि इतनी याज्ञिय है। जो हर तत्व ज्ञान - तत्वभाव से पूर्ण है।

तो हमें भी यही भूमि को यही सर्वोत्तमता से - सर्वोच्चता से - सर्वाधिकता से जो करना है वह हमें जगाना है

- वह हमें धरना है

- वह हमें प्रबलना है

- वह हमें कृतज्ञना है

- वह हमें सिंचना है

- वह हमें सुरक्षना है

- वह हमें संवरना है

- वह हमें संभलना है

- वह हमें निभाना है।

अपने अस्तित्व की योग्यता को सार्थक करने यह नूतनवर्ष को अतूट संकल्प करें। यह हमारी ही भूमि है।

" Vibrant Pushti "

"सत्यता" को हम

-तोडते रहते है

-घमरोळते रहते है

-आँख मिचौली खेलते रहते है

-दूर करते रहते है

-तरछोडते रहते है

-नकारते रहते है

-घुमाते रहते है

-गंवाते रहते है

-खोते रहते है

-डराते रहते है

-खेलते रहते है

-भरमाते रहते है

-भागते रहते है

-तिरस्कृत करते रहते है

-अपमान करते रहते है

-असमंजस में फसाते रहते है

-नपुंसक करते है

-पहचानने से इनकार करते है

-आडंबर से अलंकृत करते है

-समझसे परे करते रहते है

- चूपकिदी सांधते है

- निम्नता से धज्जियां उडाते है

- मजबूर करते है

- दोषी ठहराते है

- तर्क वितर्क से नेस्तनाबूद करते है

- असत्य करार देते है

- नासमझ भाव से त्याग देते है

- भ्रमणा में निरुपीत कर देते है

- कहीं प्रकार के प्रमाणों में धकेल देते है

- अविश्वसनीयता में डूबो देते है

- कहीं माध्यमों से नजरअंदाज करते रहते है।

ओहह! कैसे है हम?

इतनी शिक्षा पायी

इतने धर्म धरे

इतने शास्त्र उथामे

इतनी चर्चा पायी

इतने चिंतन साधा

इतने सत्संग कराये

इतनी साधना पायी

इतनी तपश्चर्या धरी

इतनी धर्म स्थली बंधाई

इतने अनुष्ठान किये

इतने पारायण किया

इतनी धर्मसभा आयोजि

इतने अनुयायी घडे

इतनी ज्ञानस्थ भूमिका निभाई

इतने धर्म सूत्रों का गहराई से अध्ययन किया

इतने संकल्प किये

हाँ! जो जो अनुभव पाया वही अनुभवों से जो सकारात्मक परिणाम पाया उन्हें विशालता से व्याप करते जाये तो " सत्यता " का सूरज उगा सकते है।

यही ही फर्ज है - यही ही पुरुषार्थ है हमारी योग्यता का - यही ही शुद्धता है हमारी जिंदगी का।

" Vibrant Pushti "

हमने हमारी विशुद्धता पहचाननी है
हमें हमारी पवित्रता पहचाननी है
हमें हमारी साक्षरता पहचाननी है
हमें हमारी श्रेष्ठता पहचाननी है
हमें हमारी योग्यता पहचाननी है
हमें हमारी धर्मता पहचाननी है
हमें हमारी संस्कृतता पहचाननी है
हमें हमारी शिष्टता पहचाननी है
हमें हमारी निष्ठता पहचाननी है
हमें हमारी वैष्णवता पहचाननी है
हमें हमारी कर्तव्यता पहचाननी है
यह पहचानने के लिए हमें जन्म जीवन - तन मन और धरती पुरुषार्थ करने के लिए प्रदान किए है।
इसमें न कोई कौटुंबिक भूमिका है
इसमें न जाति की वर्ण व्यवस्था है
इसमें न वंश की परंपरागत है
इसमें न आर्थिक और बौधिक साथ है
इसमें न धर्मधारी आचार्य प्रणाली है
यही सत्य है
यही अंश की सार्थकता है
यही अंशी की सर्जनता है
यही जगत की प्रमुखता है
यही ब्रह्मांड की प्रज्ञानता है
" Vibrant Pushti "

"धनवान" "तवंगर"

क्या मैं धनवान हूँ?

क्या मैं तवंगर हूँ?

क्या हम धनवान है?

क्या हम तवंगर है?

कैसे?

नही नही

सोच लो!

गहराई से सोच लो!

अध्ययन से सोच लो!

पैसा से सोच लो!

आभूषणों से सोच लो!

जर जोरु जमीन मिलकत से सोच लो!

हर रिश्ते नाते से सोच लो!

हर आर्थिक अर्थोपार्जन से सोच लो!

धर्म से सोच लो!

नेतागिरी से सोच लो!

हमारे पास जो है उनसे

अपने जीव और जीवन को तंदुरुस्त और विशुद्ध पवित्र कर सकते है?

हमारे पास जो है उनसे अपने जीव को और आत्म को परमात्मा में एकात्म कर सकते है?

नही

चाहे धर्मगुरु हो

चाहे धर्म शास्त्री हो

चाहे धर्म ज्ञानी हो

चाहे वैज्ञानिक हो

चाहे अनुस्नातक हो

चाहे राष्ट्र नेता हो

तो धनवान कैसे?

तो तवंगर कैसे?

क्यूँकि यही जीव जीवन जगत का कहीं न कहीं प्रकार से त्याग करना ही है - छोडना है या छूटाना है ।

चाहे दुनिया का सबसे धनवान या तवंगर क्यूँ न मानते हो!

हम सब कहते है

यह तो चक्र है

यह तो विज्ञान है

यह तो नियति है

नही नही

आप अपनी जिज्ञासा से सोच लो!

" Vibrant Pushti "

दिपावली की तिथि

"ग्यारहसी"

"द्वादशी"

"तेरहसी"

"चौदहसी"

"अमावस्या"

क्या क्या कह रही है?

ग्यारहसी - ग्यार अर्थात 1 दशक 1 = 11

1 अर्थात मैं

1 अर्थात आप

मैं और आप से जुडने से ही ग्यारहसी होती है - जिससे मेरा तन मन धन और आपका तन मन धन विशुद्ध होता है।

द्वादशी - द्वाद अर्थात 1 दशक 2 = 12

1 अर्थात मैं

2 अर्थात द्वि अर्थात आप और समाज

मैं और आप और समाज जुड जाये तो द्वादशी होती है - जिससे मेरा आंतरिक मन - सूक्ष्म तन - संस्कृत धन (बुद्धि) और आपका आंतरिक मन - सूक्ष्म तन - संस्कृत धन और समाज की मान्यता से समाज का आंतरिक मन - सूक्ष्म तन - संस्कृत धन से जुडने से जो नीति घडते है, जो नीति से संस्कार पद्धति शिक्षित होती है जो मैं - आप - समाज को सदा विशुद्ध करता है।

तेरहसी - तेरह अर्थात 1 दशक 3 = 13

1 अर्थात मैं

3 अर्थात आप + समाज + संस्कार

मैं और आप और समाज और संस्कार जुड जाये तो तेरहसी होती है।

जिससे मेरा स्थितिप्रज्ञ मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन - धारण नीति की पवित्रता आपके स्थितिप्रज्ञ मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन - धारण नीति की पवित्रता और समाज का स्थितिप्रज्ञ मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन और धारण नीति और संस्कार का आंतरिक मन - विशुद्ध तन - साक्षर धन और धारण नीति जुड जाये तो तेरहसी से जीवन संस्कृत होता है।

चौदहसी - चौदह अर्थात 1 दशक 4 = 14

1 अर्थात मैं

4 अर्थात संस्कार धारण मन - अति विशुद्ध तन - योग्य साक्षर धन - असाधारण धारण नीति और संस्कार की जीवन संस्कृति जुड जाये तो भक्ति का पार्दूभाव होता है। जिससे जन्म जीवन का अंधकार नष्ट होता है।

और

अमावस्या - जो हर अंधकार और अज्ञान को भक्ति की दिपावली से भस्मीभूत कर देते है और हर तरह से हर ओर दीपक का पूंज तेजोमय हो कर सारे ब्रह्मांड को सूरज की किरणों से भर देता है।

यही ही दीपावली का माहात्म्य है।

" Vibrant Pushti "

दीपावली आ रही है साथ साथ नूतन वर्ष भी आ रहा है।

दीपावली हमारी संस्कृति का निराला और आत्मीय सन्मान और जागृतता का उत्सव है।

आजकल हम अधिक समझते है की नया साल आ रहा है और जो गुजर रहा है जो साल उनमें कोई भूल - कोई दु:खद घटना - कोई असमंजस - कोई वचन और सन्मान भंग क्रिया से किसीका मन - आत्म - स्वभाव - संस्कार और संबंध से तरछोडा गया हो तो उनके लिए माफी का पर्व!

नही नही

यह समझ गलत और नासमझ भरी है, जो मान्यता माने - जो रिवाज माने - जो एक निम्न भाव से अपने को माफी मांगने का हकदार समझे।

ऐसा नही होना चाहिए और करना चाहिए। क्यूँकि दीपावली तो हमारे जीवन की सांस्कृतिक धार्मिक और आध्यात्मिक आनंद उमंग की श्रेष्ठ विशिष्टता है जो पूरा वर्ष हमने जो जो उद्यम किया - जो जो मन - धर्म - आत्म - तन - विज्ञान और बुद्धि धन की जागृतता पायी उन्हें सार्वभौमत्व करके जीवन सार्थक किया उनका आनंद उल्लास प्रस्थापित करने का त्योहार है।

हाँ! किसीसे कोई व्यवहार - स्वार्थी - अन्यायी - मार्मिक - धार्मिक - कार्मिक अविश्वसनीय - असमंजस भूल हो गई हो और यह भूल के लिए प्रश्च्याताप करता हो और फिरसे न भूल करने की प्रतिज्ञा करता हो तो माफ करना योग्य आवश्यक है। पर यह यही आनंद उत्सवों के पर्व में नही करना चाहिए यह तो उसी समय ही करना चाहिए जब भूल का एहसास समझ आ गया हो।

यह तो आनंदोत्सव से भरा जिसमें रंग - उमंग - उत्तम आभूषणों और वस्त्रों का परिधान, मन में शुद्धता - तन में पवित्रता - धन में न्योछावरता - आत्म में साक्षरता हो तो चारों ओर दीप ही दीप - तेज ही तेज - प्रकाश पूंज ही पूंज - जिसमें नष्ट हो गया हो हमारा अहंकार - अभिमान - द्वेष - काम - क्रोध - माया - मोह - लोभ - आदि दुष्टता - अज्ञान।

यही ही है हमारी मनुष्य - संस्कार - विज्ञान - साक्षरता की पहचान।

" Vibrant Pushti "

आइ है दिवाली हमारे द्वार

नये सूरज लेके साथ

खीलेंगे किरणें नये बहार

नये स्वपने जगाये हमार

टिमटिमाये दीप प्रज्वले

रंग बिरंगी रंगोली झगमगे

है आया प्यारा नव त्योहार

हमारे आँगन हमारे द्वार

ढम ढमा ढम मृदंग बाजे

छम छमा छम पायल नाचें

है आया हर्षोल्लास खुमार

हमारे आँगन हमारे द्वार

नीला पीला जोडा पहना

रंगों की बौछार उडाया

सजाये दीपोंका शृंगार

हमारे आँगन हमारे द्वार

पकाये घुघरा मठीया मीठा अमाप

खिलाये घर घर अपार

झूमे मिले रिश्तों का प्यार

हमारे आँगन हमारे द्वार

आप पधारे साथ दीप प्रकटाये

अरस परस आनंद लुटाये

जागे संस्कृति का त्योहार

हमारे आँगन हमारे द्वार

शुभ दीपावली शुभ जगावली

शुभ दीपावली शुभ करावली

शुभ दीपावली शुभ मिलावली

शुभ दीपावली शुभ आनंदावली

" Vibrant Pushti "

सर्वबाधानिरासेन

रामोऽयोध्यतया स्थित: ।

यत्राधर्मतमोहन्त्री

दीपावल्युत्सवायिता ।।

सा सर्वाशुभनाशिका

स्वधर्मोज्वलकारिणी

समेषां भारतीयांना

शर्मदा सर्वदा भवेत ।।

"दीपावली"

हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति आधारित

यह सूत्र दीपावली क्या है?

हम हर वर्ष यह त्योहार को क्यूँ उजागर करते है?

हम दीपावली पर्व मनाते नही है पर हमारी अंदर उजागर करना है।

दीपावली क्या है?

दीप से दीप प्रज्वलित करना

दीप से दीप हमारा अधर्म का नाश

प्रभु श्रीराम जब अधर्म को नष्ट करके जब अयोध्या पधारे तब हमारे मन में हमारे तन में हमारी क्रिया में जो अनिष्ठा - अज्ञान - अधर्म था, उन्हें यह दीप प्राकट्य से उनको नष्ट किया और हमें विशुद्ध पवित्र और ज्ञानवर्धक बनाया। तब ही तो राम राज्य की स्थापना हुई।

बस! यही दीपक यही तिथि से प्रस्थापित हो गया और तबसे हम दीपावली उत्स करते है अर्थात उजागर करते है।

न कोई भेद न कोई भरम

न कोई उच्च न कोई निच

न कोई तवंगर न कोई गरीब

न कोई बैर न कोई गैर

सब है एक समान

यही संस्कार के साथ हम जुडते आये और यही ही नीति से हम इसका पालन करते है।

यही ही दीपावली है।

यही ही नूतन वर्ष है।

" Vibrant Pushti "

अमावस्या की दीपावली रात्रि ने धरती पर दीप मालाएं प्रज्वलित कर

सारा अंधकार - अंधश्रद्धा - असमंजस - अज्ञान - अधर्म को नष्ट किया

ऐसे ही आकाश ने तारें टिमटिमा कर सारे जहाँ को झगमग कर दिया

यही दीप मालाएं और यही तारें की आहवान से एक नूतन सवेरा को जगाया - नूतन वर्ष के नये सूरज के प्रचंड किरणों से जाग उठे हमारे संकल्पों - संकेतों का नया सवेरा जो

हर हर में

घर घर में

मन मन में

तन तन में

आत्म आत्म में उगा नूतन वर्ष सवेरा

जो आपको हमारा अभिनंदन पाठवे

जो आपको योग्यता प्रदान करे

ऐसी श्री प्रभु से प्रार्थना सह

" जय श्री कृष्ण "

" Vibrant Pushti "

आप सर्वे को "नूतन वर्ष अभिनंदन!

आप सर्वे को पता ही हो सकता है की

यह नूतन वर्ष का आशीर्वाद और शुभेच्छा जो हम पाते है, यह सत्य वचन ही होता है,

उनसे हम

प्रेरणामय - प्रगतिशील - यशस्वीता - ऐश्वर्य - और जीवन का माधुर्य चोक्कस पाते ही है ।

यह सत्य वचन है।

हमारी संस्कृति में यह कहीं बार सिद्ध हुआ है।

आपने हमारी संस्कृति की धरोहरों में - रामायण - महाभारत समझी होगी उनमें कहीं द्रष्टांत है

जब जब भी कोई शुभकामनाएं करता है और आशीर्वाद और शुभेच्छा पाते है वह उन्हें पाता ही है।

यह आशीर्वाद और शुभेच्छा एक ऐसी सिद्ध ज्ञानता - साक्षरता - भावता है जो हमारी अंतर आत्म से प्रकट होती है, जो सदा विशुद्ध, पवित्र और आंतर वचनबद्ध होती है, जो सिद्ध होती है।

आप कभी भी अपने अंतर आत्म से कभी भी योग्य सत्यवचनीय आशीर्वाद और शुभेच्छा पाठवना।

" Vibrant Pushti "

परम सत्य

जिसका जल शुद्ध वह सदा विशुद्ध

जिसका जल अशुद्ध वह सदा निर्बुद्ध

हमारी गंगा मैली

हमारी यमुना मैली

हमारी नियति मैली

हमारी कृत्ति मैली

जो स्थली की जल धारा मैली

वह स्थली का निवासी मैला

विचारों से मैला

नजरों से मैला

तन से मैला

मन से मैला

धन से मैला

क्रियाओं से मैला

गति से मैला

संबंधों से मैला

रिश्तों से मैला

विश्वास से मैला

वचनों से मैला

धर्म से मैला

विज्ञानों से मैला

भावनाओं से मैला

संस्कारों से मैला

नीतियों से मैला

वंश परंपरा से मैला

संस्कृति से मैला

शासन से मैला

सलामती से मैला

सोच लो! हम है मैले?

कितने अवतारों ने जन्म धरा?

" Vibrant Pushti "

ढलते सूरज ने सोचा

मैं सूबह उगता हूँ

तब कितनी उर्जा और संकल्प के साथ

जब शाम हो रही होती है

तब तक मेरे हर संकल्प पूरे हुए देखता हूँ

और

उर्जा इतनी ही रहती है

तब तो शाम को सुहानी करता करता ढलता हूँ।

इतनी उर्जा से मैं सारे ब्रहमांड के हर तत्व को मैं उर्जावान करते करते ही आगे धपता हूँ, फिर भी यह ब्रहमांड के कहीं तत्वों बिन उर्जित क्यूँ है?

क्या मेरी उर्जा असरविहीन है?

या

वह तत्वों ऐसे है - चाहे कितना भी सिंचो पर वह नही परिवर्तित होंगे।

ओहह! यह कैसा? ऐसा क्यूँ?

यह कैसा काल है?

ऐसा क्या प्रभाव है, जो यह तत्वों उर्जा विहीन रहते है और होते है?

" Vibrant Pushti "

कितनी नजदीक से पहचानता हूँ मेरे साथ रहते व्यक्तिओं को
और मुझे भी पहचानते है यही साथ रहते व्यक्तिओं।
मुझे मेरी खुद की पहचान के लिए
मुझे मेरी खुद की जीवन शैली के लिए
मुझे मेरी खुद की जीवन सच्चाई के लिए
मुझे मेरी खुद का भविष्य संवारने के लिए
मुझे मेरे खुद को योग्य करने के लिए
मैं जागता रहता हूँ
मैं समझता रहता हूँ
हाँ! इसे कोई मेरा स्वार्थ कहते है।
हाँ! इसे कोई अपना ज्ञान कहता है।
हाँ! इसे कोई अपना भाव कहता है।
हाँ! इसे कोई अपनी जागृतता कहते है।
हाँ! इसे कोई अपनी योग्यता कहते है।
हाँ! इसे कोई अपने आप में नासमझ भी हो सकते है।
हाँ! इसे कोई अपने जीवन की गुमराहों में डूबा है।
जीवन की यह गति मुझे क्या पहचानती है? मुझे कैसे यहां पहुंचना?
सोचो! अचूक सोचना!
यही सोच के साथ जो शांती पाओ
यही सोच के साथ जो आनंद पाओ
तो
मेरा आपको प्रणाम!
" Vibrant Pushti "

हमने कभी सूरज को छूआ है?
हमने कभी चंद्र को छूआ है?

हमने कभी आकाश को छूआ है?

हमने कभी तारें को छूआ है?

हमने धरती को छूआ

हमने सागर को छूआ

हमने नदी को छूआ

हमने हवा को छूआ

हमने वनस्पति को छूआ

धरती को छूआ

सागर को छूआ

नदी को छूआ

हवा को छूआ

वनस्पति को छूआ

तो

जन्म समझते है

जीवन समझते है

कहीं सिद्धांत समझते है

कहीं परिवर्तन समझते है

कहीं तत्व समझते है

कहीं नवत्व समझते है

अगर हम

सूरज को छू लेते

चंद्र को छू लेते

आकाश को छू लेते

तारें को छू लेते

तो क्या हो जाता?

क्यूँकि हम बने है पंच महातत्वों से

यही सर्व तत्वों छू लेते तो क्या होता?

पर पहले एक बात कहेंदु

अभी हम धरती को छूते है

अभी हम सागर को छूते है

अभी हम नदी को छूते है

अभी हम हवा को छूते है

अभी हम वनस्पति को छूते है

तो यही सभी का क्या हाल होता है?

सदा गंदगी

सदा अविचारी

सदा स्वार्थी

सदा अज्ञानी

सदा अधर्मी

सदा अकर्मी

सदा रोगी

सदा भोगी

सदा जन्मी

सदा भ्रमी

सदा तर्की

सदा विरोधी

सदा अविद्यी

सदा तृष्णी

सदा ऋणी

सदा वृद्धि

सदा दुर्बल

सदा दूर्बुद्धि

सदा दोषी

सदा द्रोही

सदा विखुटी

हमारे यही जीवन के साथ साथ

जिन्होंने यह सूरज को छूआ है

जिन्होंने यह चंद्र को छूआ है

जिन्होंने यह आकाश को छूआ है

जिन्होंने यह तारें को छूआ है

वह कैसे है?

तो हम ज्ञानी हो जाते

तो हम वैज्ञानिक हो जाते

तो हम प्रज्ञानी हो जाते

तो हम सर्वज्ञ हो जाते

ओहह!

तो यह सृष्टि कैसी होगी?

तो यह प्रकृति कैसी होगी?

तो यह योनीयाँ कैसी होगी?

तो यह जन्म कैसा होगा?

तो यह जीवन कैसा होगा?

हम ऐसे कहीं व्यक्तियों को जानते है पर हम हमारी वृत्ति - कृत्ति - युति - अनीति - गति - विकृति से हम उन्हें समझते नही है, हाँ! जो समझ जाते है वह अवश्य जान जाते है

जन्म - जीवन - मृत्यु और पुरुषार्थ।

" Vibrant Pushti "

कितनी रीत से

कितनी तिथि से

कितनी लीला से

कितनी धारा से

कितनी पद्धति से

कितनी संस्कृति से

कितनी मान्यता से

कितनी धार्मिकता से

कितने संकेत से

कितने ज्ञान से

कितने भाव से

कितने उत्सव से

कितने मनोरथ से

कितने सूत्रों से

कितने शास्त्र से

कितने विज्ञान से

कितने संबंध से

कितने बंधन से

हमे जागृत करते रहते है

यह हमारा कुटुंब

यह हमारा समाज

यह हमारा धर्म

यह हमारे पूर्वजों

यह हमारे रीति रिवाजों

यह हमारे उत्सवों

यह हमारे संबंधों

यह हमारे चरित्रों

यह हमारा इतिहास

यह हमारी संस्कृति

जीवन की हर पल जगाईये

हर रीति - नीति - प्रीति - संस्कृति से हम जुडे है
जो हमारा जीवन योग्य और समृद्ध करें
जो हमारा जीवन आनंद और शांतिमय करें
जो हमारा जीवन सुखमय और गतिमय करें
आज प्रबोधिनी एकादशी
यही संकेत और दिशा सूचक है।

बार बार श्री प्रभु हमारे लिए हमारा साथ निभाने हमारी साथ रहे ऐसी सर्वोतम संस्कृति में हमने जन्म और जीवन धारण किया है, हम कितने भाग्यशाली है!

ऐसी संस्कृति और भूमि को दंडवत प्रणाम और गर्व अनुभवते यह संस्कृति को योग्य दिशा में गति करने सदा तत्पर रहे यही ही हमारे जीवन की सार्थकता है।

" Vibrant Pushti "

"मार्ग"

"रास्ता"

"पथ"

मार्ग किसे कहते है?

रास्ता किसे कहते है?

पथ किसे कहते है?

हम क्या मानते है यह

मार्ग - रास्ता - पथ

जो जो मन और पग जहां जहां चलता है उन्हें मार्ग - रास्ता और पथ कहते है।

हाँ! हमने जबसे जन्म धरा और जीवन जीने का अधिकार पाया तबसे हम हमारे मन और पग से चलते है और जो जो दिशा में चलते है वही मार्ग है - वही रास्ता है और वही पथ है।

हाँ! जो दिशा में एक बार चल दिए यह हमारे लिए सदा के लिए मार्ग - रास्ता और पथ है, चाहे वह हमें कहीं भी ले जाये - हमसे कुछ भी करले और कराले हम अडग यही ही मार्ग - रास्ता और पथ पर चलेंगे और चलायेंगे।

चाहे हमें कोई तकलीफ हो

चाहे हमें कोई समझ न हो

चाहे हमें कोई पहचान न हो

चाहे हमारा अकस्मात हो जाये

चाहे हम अंधे हो

चाहे हम धर्मांध हो

चाहे हम भटक जाये

चाहे हम लुट जाये

चाहे हम खो जाये

चाहे हम बरबाद हो जाये

चाहे हम तुट जाये

चाहे हम मिट जाये

ओहहह!

आज इसलिए मार्ग - रास्ता और पथ का अस्तित्व को ढूंढना पडता है -

चाहे धर्मगुरु हो

चाहे आचार्य हो

चाहे शिक्षक हो

चाहे वैज्ञानिक हो

चाहे अनुस्नातक हो

चाहे प्रधान हो

चाहे हम कोई भी हो

कितनी सदियाँ बिखर जायेगी

कितनी प्रकृति बदल जायेगी

कितनी सृष्टि पलट जायेगी

कितने धर्म परिवर्तन हो जायेगा

पर न हम यह मार्ग - रास्ता और पथ पर चलने की धारा को बदलेंगे न हम हमारा मन और पग का नियमन करेंगे!

" Vibrant Pushti "

चारों ओर से गूँज रहा है

श्री प्रभु का प्रेम

कोई चित्रजी से लीला दर्शन कराए

कोई कीर्तन के गान से छू आए

कोई अपनी अनुभूति से भक्ति लीला समझाए

कोई कथा वार्ता से सिद्धांत चरित्र बहाए

कोई अपनी धून में रह कर अपना स्पर्श लुटाए

कोई प्रतिक वस्त्र का चोला पहनकर आचरण जगाए

कोई माला तिलक धरकर धर्मसुधा बुझाए

कोई गृहसेवा पुष्ट कर धर्म धजा लहराए

कोई धर्म सिद्धांत जगा कर अज्ञान की दुहाई मिटाए

कोई समझ नासमझ हो कर सदा खुदकी भक्ति नैया तराए

कोई कौन क्या? कौन जो? खोद खोदकर अज्ञान की घोर तपस्याए

कोई स्थली स्थली पथ पथ परिक्रमा कर धर्म रज से पवित्राए

मैं अकेला जीवन पंछी उड उड कर भक्तिज्ञान जीवन के लिए भटकाऊँ

कहीं कभी पा जाऊँ श्री प्रभु को जन्म सार्थक संधाऊँ।

" Vibrant Pushti "

अगर हम खुद को मनुष्य समझते है तो कभी

हवा से बातें करो

धरती से बातें करो

नदी या सागर से बातें करो

वनस्पति से बातें करो

फूलों से बातें करो

फलों से बातें करो

सूर्य से बातें करो

चंद्र से बाते करो

आकाश से बातें करो

शायद हमें कुछ कहदे हमारी सत्यता

हम हमारे नैन से देखते है

हम हमारे मन से सोचते है

हम हमारे धन से उपभोगते है

कि

वह एक हो कर ही रहते है

वह एक हो कर ही जीते है

वह एक हो कर ही मिटते है

वह एक हो कर ही लुटाते है

वह एक हो कर ही आनंदते है

वह एक हो कर ही परिवर्तते है

और हम

न एक हो कर रहते है

खुद को एक दूसरे से दूर करते है

न एक हो कर जीते है

खुद का जीवन स्तर ऊंचा करने एक दूसरे को हराते है

न एक हो कर मिटते है

खुद को जिंदा रखने दूसरे को मिटाते है

न एक हो कर लुटाते है

खुद को सलामत करने दूसरे को लुटते है

न एक हो कर आनंदते है

खुद के आनंद के लिए दूसरे का आनंद ध्वंस करते है

न एक हो कर परिवर्तते है

खुद को परिवर्तन की समझ नही और दूसरे में परिवर्तन चाहते है

सच! कैसे है हम?

" Vibrant Pushti "

मैंने मेरे विचार कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे अक्षर कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे स्वर कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे कार्य कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे डग कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरे हस्त कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरा धर्म कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरा संदेश कहीं तक पहुंचाया

मैंने मेरी महक कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी दृष्टि कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी वृत्ति कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी सृष्टि कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी गूँज कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी किर्ति कहीं तक पहुंचायी

मैंने मेरी मान्यता कहीं तक पहुंचायी

मेरी मंजिल तक पहुंचने

मेरे ध्येय तक पहुंचने

मेरे सुख तक पहुंचने

मेरी मुक्ति तक पहुंचने

मेरे ज्ञान तक पहुंचने

मेरे भाव तक पहुंचने

मेरी प्रीत तक पहुंचने

मेरी जिज्ञासा तक पहुंचने

मेरी आकांक्षा तक पहुंचने

मेरी प्यास तक पहुंचने

मेरी आश तक पहुंचने

मेरे लक्ष्य तक पहुंचने

मेरे आनंद तक पहुंचने

यही ही है मेरा जीवन पुरुषार्थ

जो आजतक जो पहुंचा हूँ

जो अभी मुझे स्पर्शती है।

" Vibrant Pushti "

सोचते है

कितनी श्री मद् भागवत सप्ताह होती है

कितनी श्री रामायण की कथा होती है

कितने श्री हनुमान चालीसा के पाठ होते है

कितने भगवान की पूजा होती है

कितने हवेली में मनोरथ होते है

कितने मंदिर में दर्शन होते है

कितनी उपासना और साधना होती है

कितने यज्ञ होते है

कितनी भजन संध्या होती है

कितने भक्ति के उत्सवों होते है

कितने धर्म शास्त्र आधारित दिक्षा होती है

कितने शास्त्रोच्चार होते है

कितने अनुष्ठान होते है

कितनी गृह सेवा होती है

कितनी दान दक्षिणा होती है

कितने धाम परिक्रमा होती है

कितनी धर्म पद यात्रा होती है

अरे! कितनी मान्यता और बाधाएं होती है

सोच कर समझना

हम जीते जीते क्या क्या धर्मोक्तक और आध्यात्मिक क्या क्या नही करते है?

ओहह!

कितने संत - बापु - कथाकार - गुरु और सन्यासी है?

क्या हमारा अहंकार तुटा?

क्या हमारी माया छूटी?

क्या हमारा अंधकार मिटा?

क्या हमारे जीवन सुधार हुआ?

क्या हममें सलामती जागी?

क्या हमने योग्यता पायी?

मैं नकारात्मक नही जगा रहा हूँ

मैं खुदको जगा रहा हूँ खुद के जीवन के अनुभव से

मैं खुदको समझ रहा हूँ खुद के जीवन सिद्धांत से

मैं खुदको घड रहा हूँ यह संसार - समाज और संस्कृति से

क्यूँकि! जो धरती - प्रकृति - सृष्टि - संस्कृति और धर्म से जो पाया है या जो ग्रहण किया है या अपनाया है वह पुरुषार्थ को पहचानना तो चाहिए ही।

" Vibrant Pushti "

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर साँस शुद्ध हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर मानसता द्रड हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर घडी पुरुषार्थ से हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरे हर विचार सुशिक्षित हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरे हर कार्य सैद्धांतिक हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर रीति नैतिक हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर वृत्ति निसंदेह हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर द्रष्टि निसंशय हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर गति संगति हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरा हर कदम मंजिल हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरा हर ख्याल सिद्धांत हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरी हर याद प्रीत हो

कितना ख्याल है उन्हें मेरा

की मेरा हर दर्द विरह हो

" Vibrant Pushti "
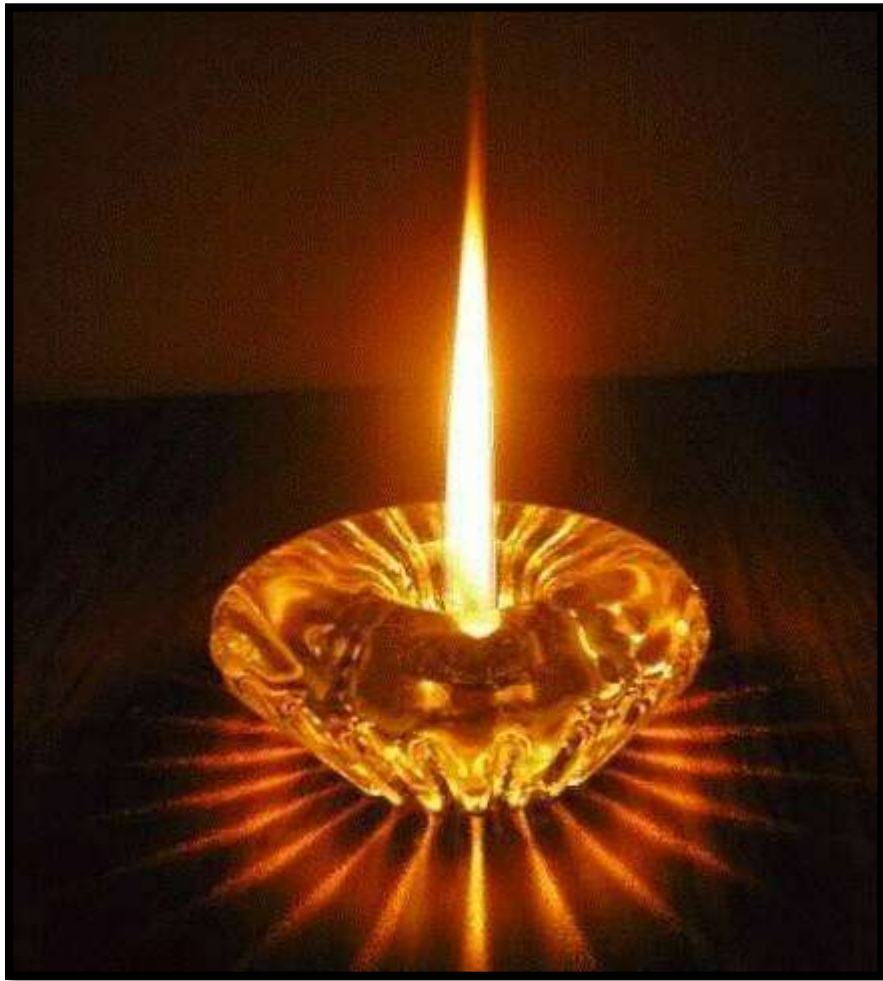
क्या मुझे लगता है

कि जो अपनाता हूँ वह सैद्धांतिक है?

क्या मुझे लगता है

कि जो सोच रहा हूँ वह मन स्थिर है?

क्या मुझे लगता है

कि जो कर रहा हूँ वह तन स्वस्थ सेवा के लिए संवारा है?

क्या मुझे लगता है

कि जो अर्थोपार्जन कर रहा हूँ वह धन प्रमाणिक है?

क्या मुझे लगता है

कि जो जिज्ञासा कर रहा हूँ वह सार्थक है?

क्या मुझे लगता है

कि जो सुन रहा हूँ वह विशुद्ध है?

क्या मुझे लगता है

कि जो कह रहा हूँ वह ज्ञान सभर है?

क्या मुझे लगता है

कि जो अनुभव पा रहा हूँ वह जीवन सुखमय है?

क्या मुझे लगता है

कि जो ज्ञान पा रहा हूँ वह निसंशय है?

क्या मुझे लगता है

कि जो भाव जगा रहा हूँ वह निष्कपट है?

क्या मुझे लगता है

कि जो समझ रहा हूँ वह जीवन घडतर है?

क्या मुझे लगता है

कि जो वर्तमान है वह भूतकाल का सुधार है?

क्या मुझे लगता है

कि जो साथ है वह ही पुरुषार्थ है?

क्या मुझे लगता है

कि जो पास है वह ही भूमिका है?

क्या मुझे लगता है

कि जो धरता हूँ वह सत्य धर्म है?

क्या मुझे लगता है

कि जो भरता हूँ वह उपयोगी है?

" Vibrant Pushti "

"भागवत"

भग + आवत = भागवत

भग - भगवदीय आवत = भागवत

भग + आवत - ऐसे जीव को घडत जो जीव आत्म परिवर्तित कर भक्तिज्ञान से भगवान को अपनी ओर खींचे - भागवत

भ + आग + वत = भागवत

भ - जो जगाये आग - इतनी विरह की - जो हर दोष नष्ट कराये = भागवत

भ - जो भगाये अर्थात ऐसे पुरुषार्थ कराये, जिससे ऐसे गुण घडाये - जो श्रेष्ठ भगवदीय आग में हर कालात्मक दोष नष्ट करे - भागवत

भागवत परम श्रेष्ठ भ - भाव जगावत

भागवत परम श्रेष्ठ भ - भाव ज्ञान जगावत

जो हर चेष्टा परम भगवदीय निरुपीत - भागवत

जो हर भाव परम भगवदीय पूरत - भागवत

जो हर भाव ज्ञान परम भगवदीय प्रवृत्तिय - भागवत

हे जीव! कितना पावित्रय्! कितना परिवर्तक! कितना सरल! कितना अलौकिक! कितना धार्मिक! कितना आत्मीय! कितना आध्यात्मिक सैद्धांतिक सदगुणों सिंचित - भागवत

जो सदा आवत द्वार हमारे - भागवत

जो सदा पावत प्रीत तुम्हारे - भागवत

जो सदा धावत गुण तुम्हारे - भागवत

जो सदा कृतत भक्ति तुम्हारे - भागवत

जो सदा वृतत शरण तुम्हारे - भागवत

जो सदा निवारत दोष हमारे - भागवत

" Vibrant Pushti "

हर तरह की औषधि ऋतु

तो भी रोगी

हर तरह की ऊर्जित सुबह

तो भी शक्ति विहीन

हर तरह की नीरव रात्रि

तो भी बैचेन

हर तरह के आयोजित दिन

तो भी अधुरप

हर तरह के इच्छित संबंध

तो भी वैर

हर तरह की सैद्धांतिक समझ

तो भी असमंजस

हर तरह के सात्विक धान्य

तो भी विकृताहार

हर तरह की श्रद्धा धार्मिक

तो भी अंधश्रद्धा

हर तरह से मानसिक योग्यता

तो भी मान्यता

हर तरह से तन अवयवता

तो भी अपंग

हर तरह के अर्थोपार्जन साधन

तो भी भिखारी

हर तरह के संयमन निधि

तो भी व्यभिचारी

हर तरह के साधन संपन्न

तो भी निर्भर वादी

हर तरह के सुधाराधारी

तो भी आलसी

हर तरह से कष्ट भंजक

तो भी कष्टदायी

हर तरह के स्वतंत्रग्राही

तो भी निराधारी

हर तरह के शुद्ध ग्राही

तो भी दुष्टाचारी

हर तरह के नियमानुसारी

तो भी भ्रष्टाचारी

हर तरह की शिक्षित नीति

तो भी अनीति

हर तरह के विश्वासवचनी

तो भी विश्वासधाती

हर तरह की चारों ओर सच्चाई

तो भी हर तरफ बुराई

ऐसे कितने हर तरहे

तो भी क्यूँ ऐसे?

हे प्रभु!

" Vibrant Pushti "

"कुब्जा" ओहह क्या चरित्र है!

क्या हम कृष्ण चरित्र की कोई वार्ता सुनते है - जानते है - समझते है?

कभी गहराई से - चिंतन से - अध्ययन से अपने आप को कुब्जा से तुलनात्मक रूप से देखो।

सच कहे

हम कुब्जा से भी अधिक कुब्ज है।

सोचो अधिक बार सोचो

कुब्जा नाम सुनते ही हमारी द्रष्टि में एक ऐसी तस्वीर उठती है जो शायद हमने हमारे लिए कभी न सोची होगी।

कुरुप - कुअंग - कढंगी - अशोभनीय - विकृतिय - अमंगलीय - अघटितिय - गिन्ननिय - निशवंशीय - निम्निय - अभद्रिय - तिरस्कृतिय - दुर्गंधिय आदि।

ओहहह!

अवश्य सोचना!

कितनी भयावह!

सोचो! निरंतर सोचो!

हाँ! हम कुब्जा से अधिक निम्न है।

बार बार सोचो - कुब्जा

बार बार ध्याओ - कुब्जा

कुब्जा को नैन के अरीसा में देखो

और

हमें अपने स्नानागार के अरीसा में देखो

अपने ही नैन कहेंगे

हम कितने कुरुप - कुअंग - कढंगी - अशोभनीय - विकृतिय - अमंगलीय - अघटितिय - गिन्ननिय - गिन्ननिय - निशवंशीय - निम्ननिय - अभद्रिय - तिरस्कृतिय - दुर्गंधिय आदि से अधिक है।

"कुब्जा"

क्या कहे!

" Vibrant Pushti "

" कुब्जा "

श्रीकृष्ण ने " कुब्जा " को अति उत्तम और रुप सुंदरी में परिवर्तित कर दिया।

क्यूँ?

कुब्जा का चरित्र में

कुब्जा एक स्त्री जो सदा कंस की सेवा में लगी रहती थी और हर सुबह वह कंस के लिए चंदन का अंग राग लेप लगाया करती थी।

सूक्ष्मता से सोचे

एक कंढगी स्त्री सदा यही कार्य में रहती थी तो उन्हें श्री कृष्ण का स्पर्श कैसे मिले?

कहते है कुब्जा श्री कृष्ण की भक्त थी, कैसे हो सकती है भक्त?

हाँ! जबसे उन्होंने जाना की श्री कृष्ण हमारे गाँव पधार रहे है, उसी पल से वह श्री कृष्ण के लिए ऐसा क्या हुआ कि वह अपने आप को भूल ने लगी।

वह सुबह उठती थी तो यही स्मरण से - चंदन पिसती थी यही स्मरण से - कंस महल चलती थी यही स्मरण से - अंग राग लगाती थी यही स्मरण से।

यही स्मरण स्मरण में कंस यह अंग राग से ऐसा अनुभव करता था कि मुझमें कोई परिवर्तन हो रहा है, जैसे अंग राग कि असर नष्ट हो जाती थी वह पून: कंस हो जाता था, वह बार बार यह कुब्जा दासी को यह बात कहता था और चिल्लाता था - यह मुझमें क्या हो रहा है? तुम इसमें कोई मिलावट नही करती हो ने? मुझे मारने की कोई साजिश नही कर रही ने?

कुब्जा अपने में मस्त रहती थी, जैसे अंग राग का लेप लगा कर महल से बाहर निकलती थी कि तुरंत ही उनके तन मन में एक विरह वेदना उठती थी और वह जगा रही थी एक प्रश्न - कब सुबह होगी?

" Vibrant Pushti "

कैसा है यह प्रभाव

कैसा है यह भाव

कैसा है यह ऋणात्मक संबंध

कैसा है यह वंशानुगत चक्र

कोई न कोई पहचान

कोई न कोई वचन

कोई न कोई अभिमान

कोई न कोई अपमान

कोई न कोई अज्ञान

कोई न कोई अहंकार

कोई न कोई विज्ञान

जो पहचान गया महातत्वों ध्यान

जो पहचान गया समय का अध्याय

जो जगा गया धर्म का पालन

जो जगा गया दिशा का मार्ग

जो पा गया तन मन धन का सिद्धांत

जो पा गया परब्रह्म का कर्म विज्ञान

यही है सर्वोच्च अंश

यही है सर्वोत्तम ज्ञान

यही है सर्वाधिक धर्म

यही है संपूर्ण पुरुषार्थ

यही है पूर्ण पुरुषोत्तम

" Vibrant Pushti "

थका हूँ इतना कृत्रिम सुनाईओं से

थका हूँ इतनी कृत्रिम कहाईओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम विचारों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम क्रियाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम सिद्धांतों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम कल्पनाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम संबंधो से

थका हूँ इतनी कृत्रिम दिशाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम नजरियों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम धारणाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम सूचनों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम सुर्खियों से

थका हूँ इतना कृत्रिम आशीर्वाद से

थका हूँ इतना कृत्रिम आश्वासनों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम चर्चाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम सूचनों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम सेवाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम अर्थो से

थका हूँ इतनी कृत्रिम मान्यताओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम भावार्थो से

थका हूँ इतनी कृत्रिम तुलनाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम मापदंडों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम करुणाओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम माध्यमों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम शिक्षा से

थका हूँ इतना कृत्रिम रिवाजों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम धार्मिकता से

थका हूँ इतना कृत्रिम दर्दों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम दुआओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम विश्वास से

थका हूँ इतनी कृत्रिम सच्चाइयों से

थका हूँ इतना कृत्रिम व्यवहारों से

थका हूँ इतनी कृत्रिम लाक्षणिकताओं से

थका हूँ इतना कृत्रिम संस्कारों से

क्या हम इतने तो अयोग्य नही है कि हम इतना तो न समझ पाये कि हम जीते जीते मरते रहते है और वह भी कृत्रिम जीवन से

" Vibrant Pushti "

हमारी दिनचर्या

प्रात:जागरण

प्रातः जागना कि क्रिया को हम क्या समझते है?

प्रातःकाल हुआ चलो उठे

अरे ऐसे तो हर दिन ऐसा प्रातःकाल आता है - सोते रहे - क्या उठना - उठते है!

कौन उठता है?

पता नही ऐसे कैसे प्रातः हो जाता है?

ऐसे प्रातः का नियमन तो होता रहता है!

जो उठे या जागे वह जागे! उठते ही क्या करते है?

वह क्या जाने प्रातः नींद क्या होती है?

प्रातः में सेवा करना - कहीं टहलना

वह पता नही अपने आप को क्या समझते होंगे? ओहह! यही मनुष्यों सही जीवन जीते है? उन्हें क्या कहें! ऐसे जागने वाले तो निरर्थक है ।

प्रातःकाल में भगवद दर्शन और सेवा और पूजा पाठ! वह तो ढोंगी है? ऐसे उन्हें भगवान मिल जाने वाले है!

ओहहह!

हमारी समझ कितनी अयोग्य और निम्न है?

क्या हमारी संस्कृति और सभ्यता और संस्कार ने ऐसा सिखाया है?

अरे! यह तो पचपन की उम्र वालों के लिए है, हमारे लिए यह संस्कृति, सभ्यता और संस्कार नही है।

ओहहह! कैसी समझ!

प्रातःकाल - प्रातः जागरण

अनुभव और अनुभूति से कहे

संस्कार और संस्कृति से कहे

सिद्धांत और नियमन से कहे

धर्म और जीवन से कहे

प्रकृति और सृष्टि से कहे

विज्ञान और कला से कहे

पुरुषार्थ और आध्यात्मिकता से कहे

" Vibrant Pushti "

आगे है ....

"प्रातः जागरण"

मनुष्य जीवन की यह एक अलौकिक और संयमन क्रिया है।

जो प्रातः जाग गया वह अमृत के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह कहीओ के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह स्वस्थता के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह ज्ञान के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह अखंडता के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह अमित के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह आनंद के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह मधुरता के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह संसार के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह पुरुषार्थ के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह सदाचार के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह विशुद्धता के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह पवित्रता के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह धर्म के जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह सही दिशा के लिए जाग गया

जो प्रातः जाग गया वह अपने आप के लिए जाग गया

प्रातः जागना पंच महातत्वों का स्पर्श पाना है

प्रातः आकाश में निरवता

प्रातः धरती में शीतलता

प्रातः वायु में स्वस्थता

प्रातः अग्नि में प्रजवलता

प्रातः जल में उष्णता

प्रातः का हर स्पर्श निरंतर

प्रातः का हर स्पर्श सुंदर

प्रातः का हर स्पर्श हरिहर

प्रातः का हर स्पर्श ज्योतिधर

प्रातः का हर स्पर्श सचराचर

" Vibrant Pushti "

दिनचर्या

प्रातः जागरण

प्रातः जागरण के प्रश्चयात तुरंत ही आंत:चिंतन

जैसे प्रातः जागरण अर्थात नींद से जागृत होते ही प्रथम आत्म स्मरण करना अति योग्य है।

हम यह जीवन और जगत में है और हमें यही ख्याल करना है?

हम कौन है?

हम क्या है?

यह आत्म चिंतन अति आवश्यक और विश्वसनीय है । हमें पता होता है आज हम कौन है? और हम क्या है?

यही हमसे हमारी अपने आप की ओर सत्य के लिए गति करेगा।

यही ही हमारा जीवन पुरुषार्थ का प्रथम चरण है।

जो अपना लिया उन्होंने जन्म जीवन को विशुद्ध - पवित्र और ज्ञानवर्धक करके जीवन सार्थक कर दिया।

" Vibrant Pushti "

"अपराध "

कहीं बार सुनते है

कहीं बार बोलते है

कहीं बार कहते है

अपराध - क्या है यह?

हम क्यूँ बार बार यह शब्द का प्रयोग और उपयोग करते है?

क्या हम से या हमारे से या हमारे आसपास अपराध की गूँजाईश रहती है या होती है?

क्या हम यह करने आदि हो गये है?

क्या हम यह देखने आदि हो गये है?

क्या हम जो भी निहालते या करते है - वह यही मापदंड से ही तोलते रहते है?

क्या हम इतने परिपक्व है की यह शब्द का प्रयोग करके हम - हमारी और सर्वे की तुलना से न्यायिक निर्णय करते है?

हमारे रीति रिवाज - धर्म - नीति - लक्षण यही बंधारण के यह सिद्धांत से हम मार्गदर्शक होते है?

क्या हम हर दिशा - दिक्षा - और दर्शन की मान्यता से एक सुधारक है?

क्या यही धर्म और धारणा और संस्कृति की रक्षा या आड से हम सदा इनमें चुस्तता से अपनाते है?

यह शब्द का उपयोग और उपभोग करते सलामती धरते है?

क्या यह शब्द का प्रयोग और उपयोग सदा उच्च पर परिवर्तन करते रहते है?

"अपराध " असमंजस से स्वीकारते है? या अपनी योग्यता से कृतकृत्य करते है?

" अपराध " आडंबर का एक निश्चित साधन है?

" अपराध " योग्यता को परखने और सत्य को पाने यह मूलभूत शब्द हमें सदा जागृत करते है?

" Vibrant Pushti "

कितने नैन से देखते है हम
तो भी हम संदेही

यह तन पाया है

जन्म जीवन पुरुषार्थ करने

मन से इतने असमंजस होते है

जो देखे वह भी संदेही

जो पुरुषार्थ करे वह भी अपूर्ण

ऐसा घडा है हमारा जन्म जीवन

पर और अगर क्षण भर का मौका हो

तो छू लो हमारी संस्कृति के ऋषि मुनियों के चरित्रों को

तो छू लो हमारी भक्ति के सादगी सैद्धांतिक भक्तों के चरित्रों को

तो छू लो हमारे कर्मनिष्ठ नाउम्मीद धन दौलत ठुकराने वाले पूर्वजों के चरित्रों को

तो छू ली हमारे त्यागी निर्मोही बुद्धो के चरित्रों को

जिसके पास भी यही नैन थे

जिसके पास भी यही तन थे

जिसके पास भी यही मन थे

जो जीते जीते जन्म जीवन सार्थक करते गये - आज भी वह जीते है

हम जीते जीते जन्म जीवन गुमराहते गये - हर पल मरते मरते जीते है

है अभी भी मौका

है अभी भी तक

है अभी भी समय

करना है द्रढ संकल्प

धरना है अडग पुरुषार्थ

अब हर क्षण जीना है निसंदेह

अब हर क्षण होना है निसंशय

तो

हर द्रष्टि से होंगे विजयी

हर पुरुषार्थ से होंगे अभयी

हर मानसिकता से होंगे सत्ययी

" Vibrant Pushti "

श्रीबांकेबिहारी लाल की जय

श्रीवृंदावन विहारी लाल की जय

"अरि" जीये जी भी अरि

"अरि" मृत्यु पर्यंत भी अरि

"अरि" साथ साथ भी अरि

"अरि" विचार विचार भी अरि

"अरि" कार्य कार्य भी अरि

"अरि" डग डग भी अरि

"अरि" रग रग भी अरि

"अरि" रज रज भी अरि

सच! हम कैसे निवासी

सच! हम कैसे मानसी

सच! हम कैसे व्यवसायी

सच! हम कैसे अनुयायी

सच! हम कैसे व्यवहारी

सच! हम कैसे धारी

सच! हम कैसे भारी

सच! हम कैसे राही

सच! हम कैसे विहारी

सच! हम कैसे चारी

सच! हम कैसे अनुशासि

सच! हम कैसे अनुभवी

सच! हम कैसे अनुरागी

सच! हम कैसे त्यागी

सच! हम कैसे ज्ञानी

कितने युग मिट गये

कितने काल समेट गये

कितने जीवन गुजर गये

कितने जन्म गुमराह गये

कितने जीव तबाह गये

तो भी हम संदेही

तो भी हम संशयी

तो भी हम विद्रोही

तो भी हम दोषी

तो भी हम रोगी

तो भी हम भोगी

सच! कोई एक जाग गया हमें जगाने

सच! कोई एक संवर गया हमें संवरने

सच! कोई एक संभल गया हमें संभलने

सच! कोई एक "कृष्ण" हो गया हमें एक होने

पर हम "अरि" ही "अरि" रहे जन्म जीवन पुरुषार्थे

" Vibrant Pushti "

चलते है रास्ते पर

सोचते चलते हो?

जहां पहुचना है वह तय करके चलते हो?

ऐसे ही चलते हो?

कुछ करने के लिए चलते हो?

कुछ करवाने के लिए चलते हो?

कुछ पाने के लिए चलते हो?

कुछ मकसद से चलते हो?

कुछ इरादे से चलते हो?

शोख से चलते हो?

मजबूरी से चलते हो?

कुछ देने के लिए चलते हो?

कुछ लुटाने के लिए चलते हो?

यूँ ही चलते हो?

हाँ! पर चलते है।

सोच लो! हम चलते है?

या

कोई चला रहा है?

कौन?

न कोई भगवान का नाम लेना

न कोई धर्म का पालन न समझना

न कोई रीति नीति कहना

न कोई माध्यम कहना

न कोई ध्येय कहना

न कोई असमंजस से समझाना

बस चलते है।

सोचना

अचूक सोचना

हम चलते है या.................

" Vibrant Pushti "

श्रीवल्लभ विठ्ठल गिरधारी

श्रीयमुनाजी नी बलिहारी

समझते समझते इतना समझ रहा हूँ

मुझे ही जीना है

मुझे ही संवरना है

मुझे ही समाना है

मुझे ही पाना है

मुझे ही लुटाना है

मुझे ही एक होना है

धरते धरते इतना धरना है

मुझे ही संस्कारना है

मुझे ही सिंचना है

मुझे ही जागना है

मुझे ही उत्कृष्टना है

मुझे ही प्रकटना है

मुझे ही प्रज्वलना है

करते करते इतना करना है

मुझे ही क्रियात्मकना है

मुझे ही कृतकृतना है

मुझे ही कार्यदक्षना है

मुझे ही क्रियाशीलना है

मुझे ही कृतज्ञना है

मुझे ही पुरुषार्थना है

सच! यही ही जीवन है

सच! यही ही पुरुषार्थ है

सच! यही ही सार्थकता है

सच! यही ही धर्म है

सच! यही ही जन्म संस्थापन है

सच! यही ही कर्म उपासना है

सच! यही ही अमृतता है

सच! यही ही मैं हूँ।

" Vibrant Pushti "

उउउउउ

उउउउउ

थंड थंड से नैन न खुले

थरथर थरथर धुजे तन

मन के भीतर चैन न होवे

दौडे घडी समय से देर देर

मन कचवाये तन अलसाये

नैन आकुल व्याकुल होये

आत्म जगाये प्राण जगाये

हे निष्ठुर! उठ मुसाफिर उठ

समय पकड घडी संभल

निंद को भगा नैन को उठा

तन को संभाल मन को जगा

भोर भई घनघोर गई

कलरव कलरव पंखी गाई

सरर सरर मनभावन हवा भई

सूरज की किरणें खिली

मंगल मंगल सूर गवाई

जागो मेरे कृष्ण कन्हाई!

जागो रे! जागो रे! जागो रे!

" Vibrant Pushti "

काम के तफावत जो करे

काम के विभाजन जो करे

काम के व्यवहार जो करे

काम के सिद्धांत जो तोडे

वह पिछे पस्ताय

काम से नाता जो जोडे

काम से वादा जो संभाले

काम से रिश्ता जो निभाये

काम से आनंद जो उठाये

वह पिछे सुखाये

काम से चोरी जो करे

काम से अन्याय जो करे

काम से दूरी जो करे

काम से दुश्मनी जो करे

वह पिछे पस्ताय

काम से ज्ञान जो बढाये

काम से गुल जो खिलाये

काम से नाम जो कमाये

काम से ऋणी जो बनाये

वह पिछे सुखाये

काम से समय जो घवाये

काम से आंखमिचौली जो खेले

काम से बंधन जो तोडाये

काम से निष्ठा जो चुराये

काम से विवेक जो घवाये

काम से साधन जो चुराये

वह पिछे पस्ताय

काम से प्रेम जो करे

काम से लगाव जो रखे

काम से विश्वास जो करे

काम से विशुद्ध जो करे

काम से धर्म जो धरे

काम से बंधन जो बंधे

वह पिछे सुखाये

काम से विश्वास जो बनाये

काम से आनंद जो लुटाये

काम से ऋची जो दर्शाये

काम से सिद्धांत जो रचाये

काम से भरमाळ जो भगाये

काम से मनभावन जो भाये

वह पिछे सुखाये

" Vibrant Pushti "

राधावल्लभ ! राधावल्लभ !

राधावल्लभ ! राधावल्लभ !

अपनी संस्कृति में
अपने संस्कार में
अपने धर्म में
अपनी मान्यता में
हमने अचूक बार
हमने अतूट बार
हमने अचल बार
हमने अनगिनत बार
हमने कहीं बार
हमने बार बार
छूआ छूई
छूता छूती
स्पर्श अस्पर्श
स्पृश्य अस्पृश्य
परस अपरस
सुना कहा दाँटा अधिकारा समझाया सीखाया शिक्षाया हुकुमाया डराया धमकाया धर्माया
पर
न इनका सत्य पाया
न इनका सत्य अपनाया
न इनका सत्य समझा
न इनका सत्य पहचाना
आज भी हम यही ना समझ सत्य में जीते है - ना सत्य जागृत कर पाया - ना सत्य न्याय कर पाये - ना सत्य प्रस्थापित कर सके - ना सत्य संस्थापन कर सके
कितने आचार्यों जन्में
कितने धर्म संस्थापे
कितने चरित्रों जीये
कितने ज्ञानी जागे
कितने भावी भवे
कितने भक्तों द्रवे
कितने प्रवचन

कितने सत्संग

कितनी कथा

कितने अनुष्ठान

कितने मार्ग

कितनी मान्यता

कितने धर्म

कितनी संस्कृति

कितने प्रमाण

पर न समझ पाये - न पहचान पाये - न अपना पाये - न धर पाये - न सार्थक पाये - न पुरुषार्थ पाये

" Vibrant Pushti "

श्रीनाथजीबावा सदा मेरा तन गोवर्धन में बसीयों

हे श्रीनाथजी ! सदा मेरे नयनन में बसीयों

हे श्रीनाथजी ! सदा मेरे कर्णन में गूंजीयों

इतना जला यह देश से

इतना तरसा यह देश से

इतना तडपा यह देश से

इतना गुमराहया यह देश से

इतना तरछोडाया यह देश से

इतना घवाया यह देश से

इतना घृणाया यह देश से

इतना धोखाया यह देश से

इतना मोडाया यह देश से

इतना ललचाया यह देश से

इतना बुराया यह देश से

इतना क्रोधाया यह देश से

इतना दर्दाया यह देश से

इतना मुझाया यह देश से

इतना झुठाया यह देश से

इतना भ्रष्टाया यह देश से

इतना लोभाया यह देश से

इतना ठुकराया यह देश से

इतना पछडाया यह देश से

इतना पस्ताया यह देश से

इतना कटुया यह देश से

इतना छलाया यह देश से

इतना कपटाया यह देश से

इतना छिपाया यह देश से

इतना पिटाया यह देश से

इतना निष्ठुराया यह देश से

इतना मुरझाया यह देश से

इतना दुष्टाया यह देश से

इतना दुराचाराया यह देश से

ओहह!

पर सच! क्या भूमि है यह देश की

पर सच! क्या जल है यह देश का

पर सच! क्या हवा है यह देश की

पर सच! क्या वातावरण है यह देश का

पर सच! क्या संस्कृति है यह देश की

पर सच! क्या धर्मसत्ता है यह देश की

पर सच! क्या रिश्ता है यह देश का

पर सच! क्या उत्सव है यह देश के

पर सच! क्या बंधन है यह देश का

पर सच! क्या भावना है यह देश की

पर सच! क्या संबंध है यह देश के

पर सच! क्या रंग है यह देश के

पर सच! क्या धर्मिष्ठा है यह देश की

सच! मेरे देश में इतनी विराटता है

सच! मेरे देश में इतनी विभिन्नता है

सच! मेरे देश में इतनी सौम्यता है

सच! मेरे देश में इतनी अधिकता है

सच! मेरे देश में इतनी अलौकिकता है

सच! मेरे देश में इतनी विशिष्टता है

सच! मेरे देश में इतनी एकता है

सच! मेरे देश में इतनी सेवा है

सच! मेरे देश में इतनी महानता है

सच! मेरे देश में इतनी समानता है

सच! मेरे देश में इतनी निष्ठा है

" Vibrant Pushti "

इन्सान वही है जो इन्साफ कर सके

हर वृत्ति का

हर कृति का

हर प्रवृत्ति का

हर स्वीकृति का

हर मति का

हर गति का

हर जाति का

हर विकृति का

हर संस्कृति का

हर विभूति का

हर अनुभूति का

हर भाँति का

हर ज्ञाती का

हर जागृति का

हर आकृति का

हर बस्ती का

हर हस्ती का

हर स्मृति का

हर इति का

हर पंक्ति का

हर उक्ति का

हर व्यक्ति का

हर नीति का

हर शांति का

हर क्षति का

हर त्रुटि का

हर श्रुति का

हर रीति का

हर भिती का

हर रति का

हर दिति का

हर अदिति का

हर विश्रांति का

हर तृप्ति का

हर मुक्ति का

हर विश्रुति का

हर युक्ति का

हर संगति का

हर सुश्रीती का

हर संपति का

हर ख्याति का

हर प्राप्ति का

हर शक्ति का

हर निवृत्ति का

हर तख्ति का

हर भक्ति का

" Vibrant Pushti "

हे कृष्ण ! प्रेम प्रेम और प्रेम !

हे राधा ! प्रेम प्रेम और प्रेम !

कहीं बार सोचते है

कहीं बार कहते है

कहीं बार बोलते है

कहीं बार करते है

पुराना जमाने का सिद्धांत है

पुरानी परंपरा है

पुरानी मान्यता है

पुराने समय की मर्यादा है

अगर

मगर

ऐसा

वैसा

जरा गहराई से अध्ययन करे

जरा गहराई से चिंतन करे

जरा गहराई से विचार करे

जरा गहराई से समझने की कोशिश करे

हमारा जीवन

हमारा इतिहास

हमारी संस्कृति

हमारा समाज

हमारी मान्यता

हमारा धर्म

क्या अभी अभी का है

क्या अभी उदभव हुआ है

क्या अभी जागा है

क्या अभी प्रस्थापित हुआ है

क्या अभी प्रारंभ हुआ है

क्या अभी संस्थापन हुआ है

नही

कितने योग

कितने प्रयोग

कितने संयोग

कितने जोग

कितने संजोग

कितने प्रमाण

कितने परिणाम

कितनी सूक्ष्मता

कितनी सच्चाई

कितनी योग्यता

तब ही सिद्धांत रचता है

तब ही सिद्धांत घडता है

तब ही सिद्धांत संवरता है

तब ही सिद्धांत अपनाता है

तब ही सिद्धांत मान्यता है

तब ही सिद्धांत धर्मता है

तब ही सिद्धांत संस्कारता है

तब ही सिद्धांत संस्कृतता है

तब ही सिद्धांत सामाजिक है

तो यह पुराना कैसे?

तो यह परंपरा कैसे?

तो यह मान्यता कैसे?

तो यह समय मर्यादा कैसे?

तो यह इतिहास कैसे?

तो यह युग धारित कैसे?

सच तो यह है

हमारी मानसिकता

हमारी द्रष्टि

हमारी मान्यता

हमारी समझ

हमारी कक्षा

हमारी क्षमता

हमारी धारणा

हमारी शिक्षा

हमारी योग्यता

हमारी विरासत

हमारी विद्वता

हमारी ग्रहणता

हमारी समाजता

हमारी स्वीकृति

अति महत्वपूर्ण है

अति मायना है

अति मान्य है

अति आवश्यक है

अति स्वीकार्य है

जो मान लिया तो अपना लिया

जो समझ लिया तो मान्य लिया

जो ग्रह लिया तो स्वीकार लिया

जो धारण लिया तो संस्कार किया

जो संस्कृत लिया तो धर्म किया

यह सिद्धांत असाधारण है

यह सिद्धांत असामान्य है

यह सिद्धांत सर्वोच्च है

यह सिद्धांत सर्वाधिक है

यह सिद्धांत सर्वोत्तम है

यह सिद्धांत केवल और केवल स्वीकारना ही है

यह सिद्धांत केवल और केवल अपनाना ही है

यह सिद्धांत केवल और केवल कार्यरतना ही है

यह सिद्धांत केवल ही केवल जागृताना ही है

यही तो हम है!

नही तो हम क्या है?

" Vibrant Pushti "

सूरज उठने लगा

उजाला ही उजाला

चहल पहल

आवाज ही आवाज

कोई यहाँ कोई वहां

किसीने यह किया

किसीने वह किया

चल चल कर

दौड दौड कर

भटक भटक कर

संभल संभल कर

न कोई ठहरा

न कोई रुका

नजर दौडा दौडा कर

तन मन धन लगा कर

दिन सिमट ने लगा

शाम छाने लगी

हर कोई सिमटने लगा

सरकने लगे ओर घर के

थंभने लगे हर पहिया

चुगने लगे हर दानापानी

भरने लगे हर किस्मत धानी

मिल मिल कर संतोष

गुल गुल कर मदहोश

ढलने लगी शाम

उठने लगी रात

चमकने लगे रंगीन जमाना

टिमटिमाने लगे आकाश तारा

हर नजारा रोशन

हर शमां गुलशन

कोई झूमे कोई टहले

कोई खरीदें कोई बैठे

हर कोई शांत

हर कोई हात

मूंदने लगे नैन

झुकने लगे नैन

ढलने लगे ढोलीया

बिछौने लगे चदरिया

सोने लगी हर जान

गहरने लगी हर साँस

न कोई आवाज

न कोई साज

सब हो गये एक रास

" Vibrant Pushti "

2018 वो गया

जीवन का वो साल कहींओ के साथ गुजर गया
कुछ कुछ रीत सीखा गया
कुछ कुछ नाता बांधता गया
कुछ कुछ राह संवरता गया
कुछ कुछ समझ समझाता गया
कुछ कुछ फूल बिखरता गया
कुछ कुछ रंग उडाता गया
कुछ कुछ स्पर्श करता गया
कुछ कुछ तन मन धन जगाता गया
कुछ कुछ साथ जोडता गया
कुछ कुछ संकल्प सजाता गया
कुछ कुछ महक महकाता गया
कुछ कुछ धर्म धरता गया
कुछ कुछ ज्ञान बढाता गया
कुछ कुछ भाव निहारता गया
कुछ कुछ ध्येय सिद्धता गया
कुछ कुछ अनिश्चितता संकेलता गया
कुछ कुछ सलामती द्रडता गया
कुछ कुछ निस्वार्थ जगाता गया
कुछ कुछ सेवा समर्पणता गया
कुछ कुछ प्रेम न्योछारता गया
कुछ कुछ आध्यात्म विशुद्धता गया
कुछ कुछ अहंकार तोडता गया
कुछ कुछ ममत्व छुडाता गया
कुछ कुछ सत्य द्रष्टता गया
कुछ कुछ सदाचार करवाता गया
कुछ कुछ सिद्धांत पुरुषार्थता गया
कुछ कुछ 2019 को कहता गया
यही ही है राही जिन्हें तुम्हें
यही ही है विद्यार्थी जिन्हें तुम्हें
यही ही है जिज्ञासु जिन्हें तुम्हें
यही ही है कर्मचारी जिन्हें तुम्हें
यही ही है पुरुषार्थी जिन्हें तुम्हें
ऐसी योग्यता से कृतकृत्यना

जिससे सृष्टि आनंदे
जिससे प्रकृति नाचे
जिससे धरती सिंचे
जिससे आकाश हंसे
जिससे हवा महके
जिससे सागर झुमे
जिससे सूरज तेजे
यही ही विश्वास से तुम्हें सौंपते गुजर रहा हूँ
यही ही ब्रहमांड की निधि है।
" Vibrant Pushti "

आप सभी साथी को 2019 के नये वर्ष की शुभसंकल्पे - शुभसंकेते - शुभअभिलाषाए - शुभहिम्मते - शुभसत्याए

राधा और कृष्ण

अपनी आत्मीय स्पर्श अनुभूति के सार्थक तत्व है

अपने आध्यात्मिक ज्ञान के अलौकिक सचरित्र साथी है

अपनी संस्कृति को सदगति - सदराही - सदनिधि - सदनीति - सदकृति - सदमति - सदसिद्धांत - सदभक्ति - सदसत्य - सदप्रित सिंचने के प्राथमिक धरोहर है

अपने धर्म को संस्थापन के अनोखे प्रमुख पात्र है

अपने तन मन धन और आत्म को सूक्ष्म से सूक्ष्म पहचानने के लिए परिणामीक - विशुद्ध - पवित्र परब्रह्म है

अपने विचार - कर्म - फल - भाग्य को सही दिशा में प्रामाणिक करने का अति योग्य सुचारित्र्य है

अपनी योग्यता - कक्षा - साक्षरता - सार्थकता - जन्म जीवन यात्रा - योग का सत्य प्रमाण के परिक्षक है

हाँ! क्या कहे!

पराकाष्ठा - अपराजिता - अनन्य - अकल्पनीय - चिरंजीवी - परंक्षेत्र - अप्रमेय - परिशुद्ध - परिमल - परिलब्धि - परिलक्षित - परिपूर्ण पूर्णप्रेमी - पूर्णयोगी - परंतप - परमात्मा - परमानंद है

ओहह!

" Vibrant Pushti "

अचूक पहुंचो श्री वल्लभ विधापीठ - हालोल - वडोदरा - गुजरात

सत्संग में गहराई में पहुँचना बहोत ही निराला और आत्मीय है

सत्संग में जिज्ञासा जागृत करना बहोत ही योग्यता है

सत्संग से अपने आप को संवरना - संभलना - समझना - शिक्षात्मक होना अति आवश्यक है

सत्संग से खुद को सलामत रखना - पर साथ साथ औरों को भी सलामत रखना और सिखाना यह भी एक योग्य पुरुषार्थ की दिशा है

पर

सत्संग केवल जानना - समझना पर अपने आपको न संवरना - न संभलना - न सलामत रखना तो यह आडंबर हो जाता है - अहंकार हो जाता है

जो

खुद के ज्ञान और भक्ति का नाश करते है - अभिमान करते है - असमंजस फैलाते है - अविश्वास जगाते है

जिससे संस्कृति - - संप्रदाय - सिद्धांत संस्कार - सेवकता नष्ट हो जाती है।

" Vibrant Pushti "

श्री मद् भागवत में "देवकीजी" का स्मरण तो हम सब पहचानते है। जो आकाशवाणी ने कहा था - हे कंस! देवकी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा।

देवकी - कौन है? क्या है? कैसी है?

जो कोई भविष्यवाणी उनके लिए हो!

जो कोई ऐसा सिद्धांत प्रकट होने को है जो देवकी के उदर से हो!

यह सारे ब्रह्मांड में केवल एक ही गर्भ ऐसा था और वह केवल देवकी का!

हर स्त्री का परम प्रमुख सन्मान है, हर मातृत्व चाहती है - मेरे उदर से कोई प्रखर आत्मा ही जन्म धरे!

सच! देवकीजी! सर्वश्रेष्ठ सर्वोच्च सर्वोत्तम और सर्वाधिक कुलदीप ज्योतिर्धर!

कितनी विशुद्धता - पवित्रता और योग्यता - निर्मलता - निर्मोहता होगी जो देवो के देव परम परमात्मा का सच्चिदानंद स्वरूप उनके उदर से प्रकट हो!

वाह!

देवकी जो जन्मोजन्म केवल परब्रह्म के लिए ही जन्म धरे

देवकी जो सदा जप तप स्मरण यज्ञ चिंतन धर्म वात्सल्य में ही खुदको निरुपीत किया हो।

परमानंद प्रकट हो हो और हो।

" Vibrant Pushti "

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - ऊर्जा (द्वितीय)

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

" Vibrant Pushti "

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "